MOTION
2X Learning Experience

मोशन है, तो भरोसा है

CLASS X

SAMPLE PAPER - 5

HINDI-A

SAMPLE QUESTION PAPER - 5
Hindi A (002)
Class X (2025-26)

निर्धारित समय: 3 घंटे **अधिकतम अंक: 80**

सामान्य निर्देश:

निम्नलिखित निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िए और उनका सख्ती से अनुपालन कीजिए :

- इस प्रश्नपत्र में कुल 15 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
- इस प्रश्नपत्र में कुल चार खंड हैं- क, ख, ग, घ।
- खंड-क में कुल 2 प्रश्न हैं, जिनमें उपप्रश्नों की संख्या 10 है।
- खंड-ख में कुल 4 प्रश्न हैं, जिनमें उपप्रश्नों की संख्या 20 है। दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए 16 उपप्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है ।
- खंड-ग में कुल 5 प्रश्न हैं, जिनमें उपप्रश्नों की संख्या 20 है।
- खंड-घ में कुल 4 प्रश्न हैं, सभी प्रश्नों के साथ उनके विकल्प भी दिए गए हैं।
- प्रश्नों के उत्तर दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए लिखिए ।

खंड क - अपठित बोध

1. **निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-** **[7]**

प्रकृति की ताकत के सामने इंसान कितना बौना है, यह कुछ समय पहले फिर सामने आया। यों प्रकृति सहनशीलता, धैर्य, अनुशासन की प्रतिमूर्ति के रूप में हमारा पथ-प्रदर्शन करती है, हमारे भीतर संघर्ष का भाव जगाकर समस्या के हल के लिए उत्प्रेरक का काम करती है, लेकिन जब भी इंसान ने खुद को जीवन देने वाले प्रकृति प्रदत्त उपहारों, जैसे-जल, जंगल और जमीन का शोषण जोंक की भाँति करने की कोशिश की, तब चेतावनी के रूप में प्रकृति के अनेक रंग देखने को मिले हैं। जल का स्वभाव है अविरल प्रवाह, जिसे बाँधना वर्तमान समय में मनुष्य की फितरत बन गई है। वनों ने हमेशा मनुष्य को लाभ ही दिया, लेकिन स्वार्थ में अंधे मनुष्य ने वनों को बेरहमी से उजाड़ने, पेड़ों को काटने में कभी संकोच नहीं किया। नदियों की छाती को छलनी कर अवैध खनन के रोज नए रिकॉर्ड बनाना इंसान का स्वभाव बन चुका है। पहाड़ों को खोदकर अट्टालिकाएँ खड़ी करने में हमें कोई हिचक नहीं होती। पृथ्वी के गर्भ से भू-जल, खनिज, तेल आदि को अंधाधुंध या बेलगाम तरीके से निकाले जाने का सिलसिला जारी है। इसलिए नतीजे के तौर पर अगर हर साल तबाही का सामना करना पड़े तो कोई आश्चर्य की बात नहीं होनी चाहिए।

हमें याद रखना होगा कि जब भी प्रकृति अपना अनुशासन तोड़ती है, तब भारी तबाही का मंजर ही सामने आता है। आज जरूरत इस बात की नहीं कि हम इतिहास का दर्शन कर खुद को अभी भी पुरानी हालत और रवैए में रहने दें, बल्कि आवश्यकता इस बात की है कि हम प्रकृति के इस रूप को गंभीरता से लेते हुए अपने आचरण में यथोचित सुधार करें और प्रकृति की सीमा का अतिक्रमण न करें।

1. कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए:

कथन (A): मनुष्य द्वारा जल, जंगल और जमीन का शोषण प्रकृति के कोप का मुख्य कारण है।

कारण (R): प्रकृति की सीमा का अतिक्रमण करने से प्राकृतिक आपदाएँ बढ़ जाती हैं।

विकल्प:

i. कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

ii. कथन (A) और कारण (R) दोनों ही गलत हैं।

iii. कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

iv. कथन (A) सही है किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

2. प्रकृति को बचाने और उसके शोषण को रोकने के लिए निम्नलिखित में से कौन-से कथन सही हैं?

I. जल के अविरल प्रवाह को बाधित नहीं करना चाहिए।

II. वनों का संरक्षण और पेड़ों को लगाने का कार्य बढ़ाना चाहिए।

III. पहाड़ों की खुदाई और खनन को नियंत्रित करना चाहिए।

IV. पृथ्वी से संसाधनों का अंधाधुंध दोहन करना चाहिए।

विकल्प:

i. कथन I, II और III सही हैं।

ii. कथन II और IV सही हैं।

iii. कथन III और IV सही हैं।

iv. केवल कथन I और IV सही हैं।

3. नीचे दिए गए कॉलम 1 को कॉलम 2 से सुमेलित करें और सही विकल्प का चयन करें:

कॉलम 1	**कॉलम 2**
I. जल	1. अविरल प्रवाह
II. वनों का विनाश	2. स्वार्थ में अंधे मनुष्य का कृत्य
III. प्राकृतिक आपदाएँ	3. प्रकृति के अनुशासन को तोड़ने का परिणाम

विकल्प:

i. I (1), II (2), III (3)

ii. I (2), II (1), III (3)

iii. I (3), II (1), III (2)

iv. I (1), II (3), III (2)

4. प्रकृति के अनेक रंग कब देखने को मिले हैं? (2)

5. इस गद्यांश के माध्यम से लेखक ने क्या संदेश दिया है? (2)

2. **निम्नलिखित काव्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-** **[7]**

नदी को रास्ता किसने दिखाया?
हम पूछते आए युगों से,
और सुनते भी युगों से आ रहे उत्तर नदी का
मुझे कभी कोई आया नहीं था राह दिखलाने
बनाया मार्ग मैंने आप ही अपना
ढकेला था शिलाओं को,
गिरी निर्भीकता से मैं कई ऊँचे प्रपातों से,
वनों में कंदराओं में।
भटकती भूलती मैं
फूलती उत्साह से प्रत्येक बाधा-बिध्न को
ठोकर लगाकर, ठेलकर
बढ़ती गई आगे निरंतर
एक तट को दूसरे से दूरतर करती
बढ़ी सम्पन्नता के साथ
और अपने दूर तक फैले हुए साम्राज्य के अनुरूप
गति को मंद कर-
पहुँची जहाँ सागर खड़ा था
फेन की माला लिए
मेरी प्रतीक्षा में ।

यही इतिवृत्त मेरा
मार्ग मैंने आप ही अपना बनाया था-
मगर भूमि का दावा
कि उसने ही बताया था नदी को मार्ग,
उसने ही चलाया था नदी को फिर
जहाँ, जैसे, जिधर चाहा;
शिलाएँ सामने कर दी
जहाँ वह चाहती थी।
रस्ते बदले नदी,
जरा बाएँ मुड़े।

1. नदियों की तरह व्यक्तियों का भी क्या लक्ष्य होना चाहिए? (1)

(क) अनवरत बढ़ते रहना

(ख) नया रास्ता बनाना

(ग) जो भी सामने आये उसे तहस-नहस कर देना

(घ) रास्ते बदल लेना

2. कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए:

कथन (A): नदी ने अपनी राह खुद बनाई और जीवन की यात्रा में आ रही बाधाओं को पार किया।

कारण (R): नदी का मार्ग भूमि के द्वारा निर्धारित किया गया था और शिलाएँ उसे रास्ता दिखाने के लिए सामने आई थीं।

(क) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(ख) कथन (A) और कारण (R) दोनों ही गलत हैं।

(ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

(घ) कथन (A) सही है किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

3. नदी के बारे में दिए गए विवरण के आधार पर, उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए:

I. नदी ने अपने रास्ते में आने वाली शिलाओं और बाधाओं को पार किया।

II. नदी का मार्ग भूमि ने निर्धारित किया और शिलाएँ उसे रास्ता दिखाने के लिए सामने आईं।

III. नदी ने अपनी यात्रा को रुका हुआ और धीमा बना लिया।

IV. नदी ने शिलाओं को ठेलकर अपनी यात्रा जारी रखी।

विकल्प:

(क) केवल I और IV सही हैं।

(ख) केवल II और III सही हैं।

(ग) केवल I और II सही हैं।

(घ) केवल III और IV सही हैं।

4. नदी द्वारा स्वयं अपना मार्ग बनाने से क्या शिक्षा मिलती है? (2)

5. नदी के बारे में भूमि क्या दावा करती है? (2)

खंड ख - व्यावहारिक व्याकरण

3. निम्नलिखित में से **किन्हीं चार** का निर्देशानुसार उत्तर लिखिए: **[4]**

i. नवाब साहब ने अपना तौलिया झाड़ा और सामने बिछा लिया। (सरल वाक्य में बदलिए)

ii. उन्होंने बाहें खोलकर गले लगा लिया। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

iii. उनकी शर्त मान ली गई और वे भारत आ गए। (मिश्र वाक्य में बदलिए)

iv. एक चश्मेवाला है जिसका नाम कैप्टन है। (आश्रित उपवाक्य छाँटकर उसका भेद भी लिखिए)

v. जब बच्चे उतावले हो रहे थे तब कस्तूरबा की आशंकाएँ भीतर से खरोंच रही थीं। (सरल वाक्य में बदलिए।)

4. **निर्देशानुसार उत्तर दीजिए-** **[4]**

i. बुलेटिन के लिए एक नोटिस बनाइए। (भाववाच्य में बदलिए।)

ii. सत्य बोलने की प्रेरणा दी गई थी। (कर्तृवाच्य में बदलिए।)

iii. आप कर सकते हैं। (कर्मवाच्य में बदलिए।)

iv. सारे स्कूल बन्द कर दिए जाएँ। (कर्तृवाच्य बनाइए।)

v. नेता जी ने सभा की अध्यक्षता की। (कर्मवाच्य में बदलिए।)

5. **निम्नलिखित वाक्यों में से किन्हीं चार रेखांकित पदों का पद-परिचय लिखिए- (1x4=4)** **[4]**

i. यह कविता अच्छी है या बुरी; इससे मुझे मतलब नहीं है।

ii. इसी में से वह विवशता जागी।

iii. सहसा एक चमत्कार, सूर्य उदित हुआ।

iv. भगत ने अपनी पतोहू को उसके भाई के साथ विदा किया।

v. सुरेश मेरी पुस्तक ले गया है।

6. निम्नलिखित काव्यांशों के अलंकार भेद पहचान कर लिखिए- (किन्हीं चार) **[4]**

i. चमचमात चंचल नयन, बिच घूँघट पट छीन।
मनहु सुरसरिता विमल, जल उछरत जुग मीन

ii. फूल हँसे कलियाँ मुसकाई।

iii. हनुमान की पूँछ में, लगन पाई आग।
लंका सगरी जल उठी, गए निशाचर भाग॥

iv. सागर-सा गंभीर हृदय हो, गिरी-सा ऊँचा हो जिसका मन।

v. "उदित उदय गिरी मंच पर, रघुवर बाल पतंग।
विगसे संत-सरोज सब, हरषे लोचन भृंग।।"

खंड ग - गद्य खंड (पाठ्यपुस्तक)

7. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** **[5]**

हालदार साहब को पानवाले द्वारा एक देशभक्त का इस तरह मज़ाक उड़ाया जाना अच्छा नहीं लगा। एक बेहद बूढ़ा मरियल-सा लँगड़ा आदमी सिर पर गांधी टोपी और आँखों पर काला चश्मा लगाए, एक हाथ में एक छोटी-सी संदूकची और दूसरे हाथ में एक बाँस पर टँगे बहुत-से चश्मे लिए अभी-अभी एक गली से निकला था और अब एक बंद दुकान के सहारे अपना बाँस टिका रहा था, तो इस बेचारे की दुकान भी नहीं ! फेरी लगाता है ! हालदार साहब चक्कर में पड़ गए। पूछना चाहते थे, इसे कैप्टन क्यों कहते हैं? क्या यही इसका वास्तविक नाम है? लेकिन पानवाले ने साफ़ बता दिया था कि अब वह इस बारे में और बात करने को तैयार नहीं।

i. प्रस्तुत गद्यांश में देशभक्त किसे कहा गया है?

क) कैप्टन चश्मे वाले को　　ख) हालदार साहब को

ग) इनमें से कोई नहीं　　घ) सामान्य आदमी को

ii. गद्यांश के आधार पर बताइए कि हालदार साहब किसे देखकर आश्चर्यचकित हो गए?

क) मूर्ति को　　ख) इनमें से कोई नहीं

ग) पानवाले को　　घ) कैप्टन चश्मे वाले को

iii. चश्मे वाला चश्मे किसमें रखता था?

क) एक छोटी-सी संदूकची और एक बाँस पर टाँगकर　　ख) दुकान में रखे गए काँच के काउंटर में

ग) इनमें से कोई नहीं　　घ) अपनी दुकान में

iv. हालदार साहब क्या पूछना चाहते थे?

क) कैप्टन कैसा दिखता था　　ख) कैप्टन कहाँ रहता था

ग) चश्मे वाले को कैप्टन क्यों कहते हैं
घ) इनमें से कोई नहीं

v. कैप्टन चश्मे वाला सिर पर क्या पहनता था?

क) इनमें से कोई नहीं
ख) गांधी टोपी
ग) फौज़ी टोपी
घ) पगड़ी

8. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में दीजिए:** **[6]**

i. बालगोबिन भगत की दिनचर्या लोगों के अचरज का कारण क्यों थी? **[2]**

ii. **नौबतखाने में इबादत** पाठ का लेखक बिस्मिल्ला खाँ का मतलब- बिस्मिल्ला खाँ की शहनाई। शहनाई का तात्पर्य बिस्मिल्ला खाँ का हाथ। ऐसा क्यों मानता है? **[2]**

iii. लेखक को नवाब साहब का मौन रहना और बातें करना दोनों ही अच्छा नहीं लग रहा था, क्यों? **लखनवी अंदाज़** पाठ के आधार पर लिखिए। **[2]**

iv. **संस्कृति** पाठ के अनुसार लेखक के अनुसार सभ्यता क्या है? **[2]**

खंड ग - काव्य खंड (पाठ्यपुस्तक)

9. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** **[5]**

बिहसि लखनु बोले मृदु बानी। अहो मुनीसु महाभट मानी।।
पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारु। चहत उड़ावन फूँकि पहारू।।
इहाँ कुम्हड़बतिआ कोउ नाहीं। जे तरजनी देखि मरि जाहीं।।
देखि कुठारु सरासन बाना। मैं कछु कहा सहित अभिमाना।।
भृगुसुत समुझि जनेउ बिलोकी। जो कछु कहहु सहौं रिस रोकी।।
सुर महिसुर हरिजन अरु गाई। हमरे कुल इन्ह पर न सुराई।।
बधें पापु अपकीरति हारें। मारतहू पा परिअ तुम्हारें।।
कोटि कुलिस सम बचनु तुम्हारा। ब्यर्थ धरहु धनु बान कुठारा।।
जो बिलोकि अनुचित कहेउँ, छमहु महामुनि धीर।।
सुनि सरोष भृगुबंसमनि बोले गिरा गंभीर।।

i. परशुराम अपनी कुल्हाड़ी किसे बार-बार दिखा रहे थे?

क) आचार्य द्रोण को
ख) राजा जनक को
ग) लक्ष्मण को
घ) राम को

ii. काव्यांश में **कुम्हड़बतिया** से क्या अभिप्राय है?

क) कुम्हार का फल
ख) एक प्रकार का फल
ग) कुम्हड़ा (सीताफल) का छोटा रूप
घ) गलने वाला फल

iii. **कोटि कुलिस सम बचनु तुम्हारा** में अलंकार है-

क) अनुप्रास
ख) अतिशयोक्ति
ग) श्लेष
घ) उपमा

iv. आप ने अपने धनुष बाण और कुठार व्यर्थ रखे है। किसने कहा?

क) द्रोण
ख) परशुराम
ग) लक्ष्मण
घ) जनक

v. मृगुसुत से तात्पर्य है-

क) द्रोण
ख) श्रुतकीर्ति
ग) परशुराम
घ) जनक

10. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में दीजिए:** **[6]**

i. **उत्साह** कविता के शीर्षक की सार्थकता पर प्रकाश डालिए। **[2]**

ii. छोड़कर तालाब मेरी झोंपड़ी में खिल रहे जलजात -पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए। **[2]**

iii. कवि के अनुमान से संगतकार मुख्यगायक का छोटा भाई, शिष्य या दूर का रिश्तेदार क्यों होता है? **[2]**

iv. **आत्मकथ्य** से उद्धृत निम्नलिखित काव्य-पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए - **[2]**

उसकी स्मृति पाथेय बनी है थके पथिक की पंथा की।

खंड ग - कृतिका (पूरक पाठ्यपुस्तक)

11. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में दीजिए:** **[8]**

i. **माता का अँचल** पाठ में संतान के प्रति माता-पिता के वात्सल्य भाव को कैसे व्यक्त किया गया है? अपने शब्दों में लिखिए। **[4]**

ii. **मैं क्यों लिखता हूँ?** पाठ के अनुसार अणु-बम के विस्फोट के प्रभाव को देखकर भी लेखक ने तत्काल कुछ नहीं लिखा। क्यों? **[4]**

iii. **यूमथांग** और **कटाओ** के अंतर को **साना साना हाथ जोडि** के आधार पर स्पष्ट करते हुए बताइए कि आप किस स्थल से ज्यादा प्रभावित हुए हैं। आप इनमें से किसकी यात्रा करना चाहेंगे? **[4]**

खंड घ - रचनात्मक लेखन

12. **निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में अनुच्छेद लिखिये:** **[6]**

i. **मेरा प्रिय खिलाड़ी** विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर अनुच्छेद लिखिए। **[6]**

संकेत बिंदु-

- नाम
- प्रिय लगने के गुण/कारण
- उनके जैसा बनने की इच्छा

ii. **सोशल मीडिया का मायाजाल और युवा** विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर अनुच्छेद लिखिए। **[6]**

संकेत बिंदु: सोशल मीडिया क्या?, युवाओं पर प्रभाव, मायाजाल कैसे, बचाव हेतु सुझाव

iii. **परीक्षा के कठिन दिन** विषय पर लगभग 80 से 100 शब्दो में अनुच्छेद लिखिए। **[6]**

13. अकसर हम सड़क दुर्घटनाओं के विषय में सुनते हैं, जिनका कारण खराब सड़कें भी हैं। सड़कों की दुर्दशा का वर्णन करते हुए किसी हिन्दी समाचार-पत्र के संपादक को लगभग 120 शब्दों में पत्र लिखिए। **[5]**

अथवा

अपनी कक्षा में प्रथम स्थान पाने की शुभ सूचना अपने मामा जी को पत्र द्वारा दीजिए।

14. साथी नामक स्वयंसेवी संस्था जो आलमबाग, लखनऊ, उ० प्र० में स्थित है को कुछ स्वयंसेवियों की जरूरत है, जिन्हें निकटवर्ती बस्तियों एवं गाँवों में लोगों के बीच एड्स के प्रति जागरूकता फैलाना है। इस संस्था के प्रबंधक को एक स्ववृत सहित आवेदन-पत्र लिखिए। **[5]**

अथवा

आप बतौर अध्यापक कार्यरत हैं लेकिन आप किसी कारण से अब अपना व्यवसाय बदलना चाहते हैं। नौकरी से त्यागपत्र देते हुए विद्यालय प्रमुख को **80** शब्दों में ई-मेल लिखिए। आपका नाम प्रेरणा/प्रतीक है।

15. मंडी हाउस नई दिल्ली मे उभरते चित्रकारों की चित्र प्रदर्शनी के लिए दर्शकों का ध्यान आकर्षित करते हुए 25-50 शब्दो में एक विज्ञापन तैयार कीजिए | **[4]**

अथवा

आप गिरीश सिंह हैं। किसी शर्मा जी का फोन आया है। वह आप के माता जी से बात करना चाहते हैं। लेकिन आपकी माता जी घर पर नहीं हैं। इस विषय को ध्यान में रखते हुए 30-40 शब्दों में संदेश लिखिए।

S?l??i?n

खंड क - अपठित बोध

1. 1. iii. कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
   2. i. कथन I, II और III सही हैं।
   3. i. I (1), II (2), III (3)
   4. जब इंसान ने खुद को जीवन देने वाले प्रकृति प्रदत्त उपहारों, जैसे-जल, जंगल और जमीन का शोषण जोंक की भाँति करने की कोशिश की, अर्थात जब हम स्वार्थवश अतिदोहन की प्रक्रिया को अंज़ाम देते हैं तब चेतावनी के रूप में प्रकृति के अनेक रंग देखने को मिले हैं।
   5. इस गद्यांश के माध्यम से लेखक ने यह संदेश दिया है कि हम अपने अधिकाधिक लाभ कमाने के पुराने रवैए को छोड़कर अपने आचरण में यथोचित सुधार करना होगा ।हमें प्रकृति की सीमा का अतिक्रमण नहीं करना चाहिए अन्यथा हमें गंभीर प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ेगा।
2. i. (क) नदियों की तरह लगातार बहना और अनवरत बढ़ते रहना व्यक्तियों का लक्ष्य होना चाहिए।
   ii. (घ) कथन (A) सही है किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
   iii. (क) केवल I और IV सही हैं।
   iv. नदी द्वारा स्वयं अपना मार्ग बनाने से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें भी व जीवन रूपी मार्ग में आयी कठिनाइयों को हटाकर आगे की ओर बढना चाहिए ।
   v. नदी के बारे में भूमि यह दावा करती है कि उसने ही नदी को मार्ग बताया और जहाँ, जैसे, जिधर चाहा वैसे चलाया। उसके ही शिलाएँ मार्ग में सामने कर नदी को रास्ता बदलने को विवश किया।

खंड ख - व्यावहारिक व्याकरण

3. i. नवाब साहब ने अपना तौलिया झाड़कर सामने बिछा लिया।
   ii. उन्होंने बाहें खोलीं और गले लगा लिया।
   iii. जब उनकी शर्त मान ली गई तब वे भारत आ गए।
   iv. आश्रित उपवाक्य - जिसका नाम कैप्टन है(संज्ञा उपवाक्य)
   v. बच्चों के उतावले होने पर कस्तूरबा की आशंकाएँ उसे भीतर से खरोंच रही थीं।
4. i. बुलेटिन के लिए एक नोटिस बनाया जाए।
   ii. (उसे) सत्य बोलने को प्रेरित किया गया था।
   iii. आपके द्वारा किया जा सकता है।
   iv. सारे स्कूलों को बंद कर दिया जाए।
   v. नेता जी द्वारा सभा की अध्यक्षता की गई।
5. i. **नहीं:** अव्यय, नकारात्मक
   ii. **जागी:** क्रिया, अकर्मक, भूतकाल, स्त्रीलिंग, एकवचन
   iii. **सूर्य:** संज्ञा, व्यक्तिवाचक, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता कारक
   iv. **भाई:** संज्ञा, जातिवाचक, पुल्लिंग, एकवचन, प्रथमा विभक्ति, कर्म
   के: अव्यय, संबंधबोधक
   साथ: अव्यय, संबंधबोधक
   v. **सुरेश** - व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिग, एकवचन, कर्ता कारक, 'ले गया है' क्रिया का कर्ता
   व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन ,कर्ता कारक,'ले गयाा है'क्रिया का कर्ता।
6. i. उत्प्रेक्षा अलंकार
   ii. मानवीकरण अलंकार
   iii. अतिशयोक्ति अलंकार
   iv. उपमा अलंकार
   v. रूपक अलंकार

खंड ग - गद्य खंड (पाठ्यपुस्तक)

7. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

हालदार साहब को पानवाले द्वारा एक देशभक्त का इस तरह मज़ाक उड़ाया जाना अच्छा नहीं लगा। एक बेहद बूढ़ा मरियल-सा लँगड़ा आदमी सिर पर गांधी टोपी और आँखों पर काला चश्मा लगाए, एक हाथ में एक छोटी-सी संदूकची और दूसरे हाथ में एक बाँस पर टँगे बहुत-से चश्मे लिए अभी-अभी एक गली से निकला था और अब एक बंद दुकान के सहारे अपना बाँस टिका रहा था, तो इस बेचारे की दुकान भी नहीं ! फेरी लगाता है ! हालदार साहब चक्कर में पड़ गए। पूछना चाहते थे, इसे कैप्टन क्यों कहते हैं? क्या यही इसका वास्तविक नाम है? लेकिन पानवाले ने साफ़ बता दिया था कि अब वह इस बारे में और बात करने को तैयार नहीं।

(i) **(क)** कैप्टन चश्मे वाले को
व्याख्या:

कैप्टन चश्मे वाले को

(ii) **(घ)** कैप्टन चश्मे वाले को
व्याख्या:
कैप्टन चश्मे वाले को

(iii) **(क)** एक छोटी-सी संदूकची और एक बाँस पर टाँगकर
व्याख्या:
एक छोटी-सी संदूकची और एक बाँस पर टाँगकर

(iv) **(ग)** चश्मे वाले को कैप्टन क्यों कहते हैं
व्याख्या:
चश्मे वाले को कैप्टन क्यों कहते हैं

(v) **(ख)** गांधी टोपी
व्याख्या:
गांधी टोपी

8. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में दीजिए:

(i) बालगोबिन भगत की दिनचर्या लोगों के अचरज का कारण इसलिए थी क्योंकि वे सुबह उठकर दो मील दूर नदी में स्नान करने जाते थे | किसी भी मौसम का कोई भी असर उन्हें रोक नहीं पाता था | दोनों समय ईश्वर के गीत गाना, ईश्वर की साधना में लगे होते हुए भी गृहस्थी के कार्यों से वे कभी भी विरत नहीं हुए | प्रत्येक वर्ष गंगा स्नान के लिए जाना और संत-समागम में भाग लेना उन्होंने अंत समय तक नहीं छोड़ा |

(ii) लेखक **"नौबतखाने में इबादत"** पाठ में बिस्मिल्ला खाँ की शहनाई को उनके हाथ का पर्याय मानता है क्योंकि शहनाई और बिस्मिल्ला खाँ एक-दूसरे के पर्याय बन चुके हैं। शहनाईवादक के रूप में उनकी अद्वितीय पहचान और शहनाई और बिस्मिल्ला खाँ, दोनों को एक-दूसरे के कारण अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्धि मिली है।

(iii) लेखक को नवाब साहब का मौन रहना इसलिए अच्छा नहीं लग रहा था क्योंकि लेखक जब डिब्बे में आए थे, तो नवाब साहब के चेहरे पर असंतोष की छाया नज़र आ रही थी। नवाब साहब का बातें करना लेखक को इसलिए अच्छा नहीं लगा क्योंकि जब वे पहले ही बात करने के उत्सुक नहीं थे तो अब खुश होने का दिखावा क्यों कर रहे थे।

(iv) लेखक के अनुसार सभ्यता, संस्कृति का परिणाम है। सभ्यता का विकास संस्कृत से ही होता है। सभ्यता, संस्कृति का ही परिणाम है। हमारे खाने-पीने के तरीके, ओढ़ने-पहनने के तरीके, हमारे गमन-आगमन के साधन, हमारे परस्पर कट-मरने के तरीके आदि सब हमारी सभ्यता ही है। संस्कृति एक आंतरिक संस्कार है और सभ्यता एक बाहरी संस्कार है। लेखक के अनुसार संस्कृति से ही सभ्यता का जन्म हुआ है। अतः जीवन जीने का तरीका ही सभ्यता है।

खंड ग - काव्य खंड (पाठ्यपुस्तक)

9. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

बिहसि लखनु बोले मृदु बानी। अहो मुनीसु महाभट मानी।।
पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारु। चहत उड़ावन फूँकि पहारू।।
इहाँ कुम्हड़बतिआ कोउ नाहीं। जे तरजनी देखि मरि जाहीं।।
देखि कुठारु सरासन बाना। मैं कछु कहा सहित अभिमाना।।
भृगुसुत समुझि जनेउ बिलोकी। जो कछु कहहु सहौं रिस रोकी।।
सुर महिसुर हरिजन अरु गाई। हमरे कुल इन्ह पर न सुराई।।
बधें पापु अपकीरति हारें। मारतहू पा परिअ तुम्हारें।।
कोटि कुलिस सम बचनु तुम्हारा। ब्यर्थ धरहु धनु बान कुठारा।।
जो बिलोकि अनुचित कहेउँ, छमहु महामुनि धीर।।
सुनि सरोष भृगुबंसमनि बोले गिरा गंभीर।।

(i) **(ग)** लक्ष्मण को
व्याख्या:
लक्ष्मण को

(ii) **(ग)** कुम्हड़ा (सीताफल) का छोटा रूप
व्याख्या:
कुम्हड़ा (सीताफल) का छोटा रूप

(iii) **(घ)** उपमा
व्याख्या:
उपमा

(iv) **(ग)** लक्ष्मण
व्याख्या:
लक्ष्मण

(v) **(ग)** परशुराम

व्याख्या:

परशुराम

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में दीजिए:

(i) "उत्साह" कविता का शीर्षक अत्यंत सार्थक है क्योंकि यह कविता के केन्द्रीय भाव को पूर्णत: व्यक्त करता है। यह एक आह्वान गीत के रूप में प्रस्तुत है, जिसमें नव परिवर्तन के लिए नव उत्साह और नवीन कल्पनाओं का समावेश किया गया है। कविता में उत्साह और जोश से भरे हुए मनोभावों का चित्रण किया गया है, जो समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए प्रेरित करते हैं।

(ii) शिशु के मुसकाते मुख और उसके धूल-धूसरित कोमल अंगों को देखकर कवि उल्लसित है। कवि बालक की तुलना कमल की सुंदरता से करता है। धूल में सने बालक के सुंदर अंगों को देखकर उसे लग रहा है मानो कीचड़ में खिलने वाले कमल तालाब को छोड़कर उसकी झोपड़ी में खिल रहे हैं।

(iii) कवि को गायक और संगतकार के संबंधों का ठीक ज्ञान तो नहीं है। लेकिन वह उनके संबंधों को देखकर एक अनुमान लगाता है। उसके अनुमान से संगतकार गायक का कोई बहुत नजदीकी प्रियजन है। उसका प्रिय शिष्य, छोटा भाई या दूर का रिश्तेदार हो सकता है। जो उसके कठिन समय में उसका साथ देने को तैयार हैं। वह मुख्य गायक की हर आज्ञा का पालन करता हैं।

(iv) जीवन की लम्बी राह अर्थात् मार्ग पर चलते-चलते, कवि थककर चूर हो गया है। केवल स्मृति ही उसका सहारा हैं। उसकी स्मृति ही उस थकान को थोड़ा-बहुत कम कर देती हैं। यह मीठी यादें ही उसको आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती हैं।

खंड ग - कृतिका (पूरक पाठ्यपुस्तक)

11. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में दीजिए:

(i) **माता का अँचल** पाठ में संतान के प्रति माता-पिता के वात्सल्य भाव को इस प्रकार व्यक्त किया गया है कि जब बच्चे को चोट लगी थी तब वह माँ की गोद में शरण लेता है। पिता उसे अपने साथ सुबह उठाते और नहला-धुलाकर उसे अपने साथ पूजा-पाठ में बिठाते। उसके साथ खेलते। अपने हाथों से उसे भोजन करवाते। उसके हर खेल में वे शामिल रहते। सुबह उठने से लेकर रात में सोने तक वह अपने पिता के साथ ही रहता। उसके पिता दैनिक कार्यों में उसे अपने साथ रखते। माँ उसे अपने हाथों से ममतावश खाना खिलाती, उसके सिर में तेल लगाकर उसकी चोटी बनाती और उसे फूलदार कुरता पहनाती।

(ii) लेखक ने हिरोशिमा में हुए अणु-बम के विस्फोट के प्रभाव को प्रत्यक्ष देखा फिर भी कुछ नहीं लिखा। इसका कारण यह था कि लेखक के अनुभूति में कसर थी। अनुभूति-पक्ष के अभाव में लिखने से उतनी सार्थकता नहीं होती जितनी अनुभूति के होने पर होती है।

(iii) **साना साना हाथ जोडि** पाठ के आधार पर यूमथांग के रास्ते सब तरफ फूलों से लदी वादियाँ थीं जबकि कटाओ में बर्फ ताजा-ताजा गिरी थी। दूर से ऐसे लग रहा था मानो किसी ने पहाड़ों पर पाउडर छिड़क दिया हो। कहीं-कहीं वह पाउडर बची रह गई थी और कहीं धूप में बह गई थी। बर्फ से ढके पहाड़ और आसमान एक हो रहे थे। मैं कटाओ से अधिक प्रभावित हूँ क्योंकि एकमात्र वही हिमपात होता है। उसका प्राकृतिक सौन्दर्य अभी भी बरक़रार है। मैं कटाओ की यात्रा करना चाहूँगा क्योंकि वहां जाकर लगता है कि हम जन्नत में आ गए हों।

खंड घ - रचनात्मक लेखन

12. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में अनुच्छेद लिखिये:

(i) **मेरा प्रिय खिलाड़ी**

मेरा प्रिय खिलाड़ी विराट कोहली है। वह न केवल एक महान क्रिकेटर हैं, बल्कि एक प्रेरणादायक व्यक्तित्व भी हैं। उनकी खेल में मेहनत और समर्पण ने उन्हें विश्व स्तर पर पहचान दिलाई है। कोहली की बल्लेबाजी में उत्कृष्टता, तकनीकी कुशलता और संघर्षशीलता उन्हें मेरे लिए विशेष बनाती हैं। उनकी फिटनेस और मानसिक मजबूती भी अद्वितीय हैं, जो दर्शाती है कि वह खेल के प्रति कितने गंभीर हैं।

विराट कोहली का आत्मविश्वास और सकारात्मकता मुझे बेहद पसंद है। वह हमेशा अपने खेल में सुधार करने की कोशिश करते हैं और कभी हार नहीं मानते। उनके नेतृत्व में भारतीय क्रिकेट टीम ने कई महत्वपूर्ण सफलताएँ हासिल की हैं। उनके जैसे बनने की इच्छा मुझे प्रेरित करती है, क्योंकि मैं भी जीवन में उनके समान मेहनत और समर्पण से आगे बढ़ना चाहता हूँ। मुझे उम्मीद है कि एक दिन मैं भी उनकी तरह अपने लक्ष्यों को हासिल कर सकूँगा।

(ii) **सोशल मीडिया का मायाजाल और युवा**

सोशल मीडिया बहुत ही शक्तिशाली और सशक्त माध्यम है और इसका प्रभाव प्रत्येक व्यक्ति पर पड़ता है। आज सोशल मीडिया के बिना जीवन की कल्पना करना मुश्किल है। सोशल मीडिया का नकारात्मक प्रभाव युवाओं में सबसे अधिक देखने को मिलता है। युवा अब शारीरिक खेलों और मनोरंजन के बजाय वीडियो गेम, यूट्यूब आदि का प्रयोग अधिक करते हैं, जिससे युवा वर्ग शारीरिक और मानसिक तौर पर कमज़ोर हो रहा है। सोशल मीडिया एक ऐसा मायाजाल है जो हमारे जीवन से जुड़ा हुआ है। हालाँकि, सोशल मीडिया के मायाजाल में युवा अनुकूलता, अकेलापन, चिंता और अधिक बदलाव के शिकार हो सकते हैं। धीरे-धीरे दूसरों से तुलना, असामाजिक तथा अस्थायी रिश्तों के चक्रव्यूह में उलझते रहने का खतरा होता है।

इस समस्या को सुलझाने के लिए, युवाओं को सोशल मीडिया के उपयोग के लिए सकारात्मक और संतुलित दिशा-निर्देश प्रदान करना आवश्यक है। वे समय सीमा को संयंत्रित करें, आपसी संवाद को बढ़ावा दें और विश्वासनीय स्रोतों से सत्यापन करें। युवाओं को यह बात ध्यान रखना चाहिए कि सोशल मीडिया की चकाचौंध को खुद पर हावी ना होने दें, यहाँ हर पोस्ट पर मिलने वाले लाइक्स, कमेंट आपकी जान से ज़्यादा कीमती नहीं हैं। सोशल मीडिया उपयोग करते समय यह विशेष ध्यान रखें कि किसी भी अनजान व्यक्ति की फ्रेंड रिक्वेस्ट एक्सेप्ट ना करें और किसी से भी अपनी प्राइवेट जानकारी शेयर ना करें। युवा सक्रिय और समर्थ सोशल मीडिया उपयोग के माध्यम से सकारात्मक परिवर्तन के अभियान में शामिल होने से इस मायाजाल से उन्हें बचाया जा सकता है।

(iii) वास्तव में परीक्षा के दिन कठिन उन विद्यार्थियों के लिए होते हैं, जो परीक्षा से जूझने के लिए, परीक्षा में खरा उतरने के लिए, पहले से ही समय के साथ-साथ तैयारी नहीं करते। जो विद्यार्थी प्रतिदिन की कक्षाओं के साथ-साथ परीक्षा की तैयारी भी करते जाते हैं, उन्हें परीक्षा का सामना करने

से डर नहीं लगता। वे तो परीक्षा का इंतजार करते हैं। उन्हें परीक्षा के दिन कठिन नहीं, सुखद लगते हैं। वे परीक्षा की कसौटी पर खरा उतरना चाहते हैं और खरा उतरना जानते भी हैं, क्योंकि जिस प्रकार सोने को कसौटी पर परखा जाता है, उसी प्रकार विद्यार्थी की योग्यता की परख परीक्षा की कसौटी पर होती है। यही एक प्रत्यक्ष प्रमाण या मापदण्ड होता है, जिससे परीक्षार्थी के योग्यता-स्तर को जाँच कर उसे अगली कक्षा में प्रवेश के लिए या नौकरी के योग्य समझा जाता है।

परीक्षा तो विद्यार्थियों को गंभीरतापूर्वक अध्ययन करने के लिए कहती है। परीक्षा में अधिकाधिक अंक प्राप्त करने के लिए प्रतिभाशाली विद्यार्थी परीक्षा की डटकर तैयारी करते हैं, उन्हें परीक्षा से डर नहीं लगता। परीक्षा विद्यार्थियों में स्पर्धा की भावना भरती है तथा उनकी आलसी प्रवृत्ति को झकझोर कर परिश्रम करने में सहायक बनती है। परीक्षा तो परीक्षा ही होती है। पर परीक्षा-पद्धति ऐसी होनी चाहिए, जिससे विद्यार्थी की शिक्षा का मूल उद्देश्य पूरा हो, उसकी योग्यता की सही जाँच हो और उसे परीक्षा के दिन कठिन न लगें। इसके लिए सार्थक प्रयास करने होंगे और ये प्रयास तभी सफल होंगे, जब उन्हें सुनियोजित योजना के तहत लागू किया जाएगा।

13. 23, अजमेरी गेट
जोधपुर
दिनांकः 2/XX/20XX
सेवा में,
संपादक महोदय,
नवभारत टाइम्स,
जोधपुर
विषय : सड़कों की दुर्दशा पर पत्र।
महोदय,
निवेदन है कि इस पत्र के माध्यम से मैं सड़कों की दुर्दशा की ओंर नगर निगम का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ। हमने नगर निगम अधिकारी को अनेक पत्र लिखे पर इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया गया। अब मैं इस आशा से यह पत्र लिख रहा हूँ कि शायद नगर निगम के अधिकारी हमारे क्षेत्र के लोगों का ध्यान रखते हुए उचित कार्यवाही करेंगे। यहाँ की सड़के इतनी संकरी है कि किसी वाहन के गुजरने पर पैदल चलने वाले लोगों के लिए जगह ही नहीं बचती। स्थान-स्थान पर यहाँ गड्ढे हो रहे हैं और बरसात के दिनों में उनमें पानी भर जाता है और वे दुर्घटना को आमंत्रण देते हैं। सड़क की लाइट अधिकांश टूटी-फूटी हैं जिससे सड़क पर अँधेरा रहता है। आशा है कि आप मेरे इस पत्र को अपने समाचार पत्र में स्थान देंगे।
भवदीय
क.ख.ग.

अथवा

76, विजय नगर,
जयपुर
05 मार्च, 2019
आदरणीय मामाजी,
सादर प्रणाम।
आपको यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव होगा कि इस वर्ष के परीक्षाफल में मैंने विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। यह सब माताजी, पिताजी तथा आपके आशीर्वाद का परिणाम है। अब आपको अपना वादा पूरा करना पड़ेगा। ग्रीष्मावकाश में मैं आपके पास आऊँगा मेरा उपहार तैयार रखियेगा।
मामीजी को सादर नमस्कार।
आपका प्रिय भांजा,
श्रवण

14. प्रति,
प्रबंधक महोदय
'साथी' स्वयंसेवी संस्था
आलमबाग, लखनऊ (उ० प्र०)।
विषय-स्वयंसेवी की भर्ती के संबंध में।
मान्यवर,
दिनांक 05 मई, 2019 को लखनऊ से प्रकाशित 'अमर उजाला' समाचार-पत्र में छपे विज्ञापन से ज्ञात हुआ कि आपकी संस्था को एड्स के बारे जागरूकता का प्रचार-प्रसार करने के लिए स्वयं सेवियों की जरूरत है। मैंने एड्स के विषय में बहुत गहन अध्ययन किया है और इसके बारे में मुझे अत्याधिक जानकारी भी है। इसलिए इस संबंध में अपना आवेदन-पत्र प्रस्तुत कर रहा है, जिसका संक्षिप्त व्यक्तिगत विवरण निम्नलिखित है-
नाम - कुलवन्त सिंह
पिता का नाम - श्री धीरज सिंह
जन्मतिथि - 19 मार्च, 1991
पता - ग्राम-रामपुर, पो०-ऊँचहरा, जनपद-उन्नाव (उ० प्र०)।
शैक्षणिक योग्यताएँ-

दसवीं कक्षा	मा० शि० प० इलाहाबाद उ० प्र०	2007	63%
बारहवीं कक्षा	मा० शि० प० इलाहाबाद उ० प्र०	2009	72%

बी.ए.	लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ	2012	66%
लोकसंपर्क में द्विवर्षीय डिप्लोमा	लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ	2014	प्रथम श्रेणी

अनुभव- 'सहयोग' संस्था में एक वर्ष का कार्यानुभव।
आशा है कि आप सेवा का अवसर प्रदान कर कृतार्थ करेंगे।
सधन्यवाद
प्रार्थी
कुलवन्त सिंह
दिनांक 08 फरवरी, 2019
संलग्न- शैक्षणिक एवं अनुभव प्रमाण-पत्रों की छायांकित प्रति।

अथवा

From: Prerna56@gmail.com
To: shailendraschool@gmail.com
विषय - नौकरी से त्यागपत्र देने हेतु।
महोदय,
मेरा नाम प्रेरणा है। मैं आपके प्रतिष्ठित विद्यालय में एक शिक्षक के रूप में कार्यरत हूँ। मैं आपको यह सूचित करना चाहती हूँ कि व्यक्तिगत कारणों की वजह से मैं नौकरी से अस्थायी रूप से इस्तीफा देने जा रही हूँ।
मेरे कार्यकाल के दौरान मुझे विद्यालय के साथीयों का साथ और समर्थन मिला है, जिसके लिए मैं हृदय से आभारी हूँ। में नोटिस अवधि के दौरान अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करने की पूरी कोशिश करूँगी। कृपया मेरा इस्तीफा स्वीकार करें। आपकी अति कृपा होगी।
बहुत आभारी और सादर,
प्रेरणा

15.

चित्र प्रदर्शनी

उभरते चित्रकारों द्वारा बनाए गए चित्रों की प्रदर्शनी आयोजित की जा रही है।
इच्छुक व्यक्ति प्रदर्शनी में अपने पसंदीदा चित्र आकर्षक कीमत पर खरीद भी सकते हैं।
नोट :- आपकी उपस्थिति कलाकारों की हौसला अफजाई करेगी।
स्थान- मंडी हाउस, नई दिल्ली में
दिनांक - 17 जनवरी से 19 जनवरी, 2019 तक
समय - प्रातः 9 बजे से सायं 5 बजे तक

अथवा

संदेश

12 अक्तूबर 2020
प्रातः 10:30 बजे
आदरणीय माता जी,
कुछ समय पहले शर्मा अंकल जी का फोन आया था। आप घर पर उपस्थित नहीं थी। मैंने फोन उठाया, उन्होंने कहा की जैसे ही आप आएँ मुझसे फोन पर बात अवश्य करें। हाँ, उन्होंने यह भी कहा है कि आपके ईमेल पर कुछ संदेश है, उसे अवश्य पढ़ लें।
गिरीश

Continuing to keep the pledge

of **imparting education** for the **last 18 Years**

102908+ SELECTIONS SINCE 2007

JEE (Advanced)	JEE (Main)	NEET/AIIMS	NTSE/OLYMPIADS
18798	46405	32492 (Under 50000 Rank)	5213 (6th to 10th class)

Most Promising RANKS
Produced by MOTION Faculties

NEET / AIIMS

- AIR-1 to 10 — 25 Times
- AIR-11 to 50 — 85 Times
- AIR-51 to 100 — 90 Times

JEE MAIN+ADVANCED

- AIR-1 to 10 — 9 Times
- AIR-11 to 50 — 41 Times
- AIR-51 to 100 — 47 Times

NITIN VIIJAY (NV Sir)
Founder & CEO

Nation's Best SELECTION
Percentage (%) Ratio

Student Qualified in NEET
(2025)
6972/7645 =
91.2%

Student Qualified in JEE ADVANCED
(2025)
3231/6332 =
51.02%

Student Qualified in JEE MAIN
(2025)
6930/10532 =
65.8%